* श्रीः *

सफलता के सिद्धान्त

(लाख २ रुपये की एक २ ब...

पण्डित महेन्दुलाल गर्ग

संग्रहीत।

और

सुखसञ्चारक कम्पनी के मालिक

पं० क्षेत्रपाल शर्म्मा द्वारा

प्रकाशित।

पुस्तक मिलने का पता—

क्षेत्रपालशर्म्मा

मालिक सुखसञ्चारक कम्पनी

मथुरा।

सन् १९११ ई०

मूल्य प्रति पुस्तक ।) आने.

ॐ प्रस्तावना ॐ

मनुष्य मात्र की यह इच्छा है कि उसका जीवन सफलता को प्राप्त हो। इसके लिये अनेक चेष्टाएँ और प्रयत्न बताये जाते हैं जिसने जिस बात से लाभ उठाया है वह उसीको सफलता का मूल मंत्र समझता है। हमने इस पुस्तक के सम्पादन करने में उन सब मूलमंत्रों को एकत्र करने की चेष्टा की है। पाठक गण अपनी रुचि के अनुसार इनमें से चुनलें और अपने जीवन को सफल बनाने में प्रवृत्त हों। चतुर लेखक इच्छा करें तो एक २ मंत्र के महात्म्य पर एक २ ग्रन्थ रच सकते हैं परन्तु कोरे महात्म्य को पढ़कर प्रसन्न होने की अपेक्षा स्वयं उदाहरण बनना बहुत अच्छा होगा।

सर्व शुभचिन्तक—
क्षेत्रपालशर्म्मा
मालिक
सुखसञ्चारक कम्पनी
मथुरा।

ॐ सूचीपत्र ॐ

॥ सफलताके सिद्धान्त ॥

❀ विद्यासे कुछ लाभ है क्या ! ❀

१ जीवन को आनन्द मय बनाने से कुछ लाभ है क्या !

२ बड़ के क्षुद्र बीज को बो कर इतना बड़ा बट वृक्ष बनाने में कुछ लाभ है क्या !

३ धनी तो तुम हो, परन्तु यदि विद्वान् भी बन जाओ तो कुछ लाभ है क्या ?

४ अज्ञात अण्ड कण से मनोहर तितली बना कर दिखाने से कुछ लाभ है क्या ?

५ उच्च पद प्राप्ति करने की योग्यता हो जाने से कुछ लाभ है क्या ?

६ क्षुद्राशय जीव को महाशय बना देने से कुछ लाभ है क्या?

७ कोल्हू के बैल को देवता बना देने से कुछ लाभ है क्या ?

८ कांच के टुकड़े को सूक्ष्म दर्शक या दूरदर्शक बना देने से कुछ लाभ है क्या ?

९ नर पशु को "ब्रह्मोऽस्मि" कर देने से लाभ है क्या !

१० सांसारिक पाप ताप से मुक्ति पाने में लाभ है क्या ?

११ संकुचित क्षुद्र, कली को नेत्रानंददायी मनहरण गुलाब पुष्प बना देने से लाभ है क्या ?

१२ अन्धे को सूझता बना देने से लाभ है क्या

१३ शारीरिक तथा मानसिक बल एकाग्र कर जगद्विजयी होजाने से लाभ है क्या ?

१४ धन बल जिस के लिये व्यर्थ है जीवन का वह परमानन्द प्राप्त करने से लाभ है क्या !

१५ सदाचरण रूपी द्रव्य और आत्मज्ञान रूपी अक्षय धन प्राप्त करना लाभ है क्या ।

१६ विपत्ति और बुढापे में धैर्य, शान्ति, और सत्परामर्श दाता महात्माका सत्संग लाभ है क्या ?

१७ चतुर और उत्साही नव युवक-जिन में से बहुतों ने उच्चपद पाना है-तुमारे आजीवन मित्र बनजांय, यह लाभ है क्या ?

१८ इतिहास और विज्ञान के जिन सिद्धान्तों से मनुष्य स्वास्थ्य और सफलता प्राप्ति कर सकता है उन में दक्ष होजा ना लाभ है क्या ?

१९ न्याय और राजनीति का तत्वजानकर सच्चे स्वदेश भक्त बनने से लाभ है क्या ?

२० आत्मज्ञान प्राप्त करके ब्रह्मानन्दका सुख लेने से लाभ है क्या ?

२१ खान का निकला मिट्टी सा लोहा-घड़ीका मशीन पुरजा बनजाय, लोहे का मूल्य उस से ५० गुने भारी सोने के समान होजाय तो लाभ है क्या ?

२२ जिस मूर्ति के दर्शन से हमें किसी शूर परोपकारी तथा विद्वान् का स्मरण होता है पत्थर के टुकड़े से ऐसी मूर्ति बना ने में लाभ है क्या ?

२३ अज्ञान निद्रा से जगने, ज्ञानबल बढ़ने और आत्मोन्नति का निर्मलानंद प्राप्त करने से लाभ है क्या ?

२४ जबतक तुम्हारी इच्छाएं अधूरी पड़ी हुई हैं और जग समुद्रके परिभ्रमण में तुम्हारा विश्वास है तब तक तुमें सच्च-रित्र विद्वानों के सत्संग में रहने से लाभ है क्या ?

उद्यम साधन ।

४ उसे अपने मनोरंजन का कारण समझो उस में अपना हृदय लगादो।

५ उद्यम में उद्देश्य का विचार बांधलो अपनी पूरी सामर्थ्य से उसे करो।

६ उद्यम की जड़ पक्की रक्खो।

७ एकमन होकर एक उद्यम को पकड़ो।

८ उद्यम से उद्यमी बड़ा होता है।

९ उद्यम में अपनी पूरी योग्यता खर्च करदो सफलोद्यम होना ही सच्ची प्रतिष्ठा पाना है।

१० उद्यम के कार्य में प्रसन्न रहो।

११ कष्टका ध्यान मतकरो।

१२ बेगार की तरह कामको न टालो।

१३ उद्यम में प्रीति दिखाओ।

१४ उद्यम को आत्मोन्नति की सीढ़ी समझो अपने काम में नाम पैदाकरो।

१५ तुमारे समान जितने उद्यमी हों सब से बढ़े हुए चलो।

१६ कार्य के सब साधन अपने हाथ में रक्खो उद्यम की कडुवाहट से मुंह न बिगाड़ो।

१७ लोगों की नजर में तुमारा उद्यम चाहे छोटा ही जान पड़े परन्तु तुम अपनी योग्यता और प्रतिष्ठा इसी में समझो।

१८ अपनी कार्य प्रणाली सांसारिक नियमों के अनुकूल रक्खो।

१९ जिस उद्यम के करने में तुमारा पूरा मन लगता है वही उद्यम तुमारेलिये उत्तम होगा।

२० इस बात का विचार रक्खो कि तुम अपना उद्यम कितना बढ़ासकते हो। यह न सोचो कि अपना काम कितना कम कर सकतेहो।

२१ स्मरण रक्खो कि केवल अपने उद्यम के ही द्वारा तुम योग्यता को पहुंच सकते हो।

२२ अपना उद्यम अच्छा कर दिखाना अपनी योग्यता का प्रकाश करना है।

२ अपने उद्यम में तन्मय रहो।

२४ हाथ, पैर, कान, नाक और मन सब उद्यम में ही लगाए रहो।

२५ उद्यम में लगे हुए मनुष्य को अपने सद्गुणों को फला कर दिखाना चाहिये।

२६ स्मरण रहे कि भलाई बुराई सब प्रकार के उद्यम में विद्यमान हैं।

सुख प्राप्ति।

१ मित्रता में।
२ सदिच्छा में।
३ परोपकार में।
४ प्रीति वर्द्धक पत्रलिखने में।
५ प्रेम की बातों में।
६ आये हुए को आदर देने में।
७ कृपाभाव दिखाने में।
८ निष्काम कर्म में।
९ भाई बन्धों के साथ बरतने में।
१० शुद्ध मन में।
११ इच्छानुसार काम करने में।
१२ विश्वासी मित्र पाने में।
१३ स्वास्थ्य प्रद खेलों में।
१४ मनोभाव बढाने में।
१५ प्रसन्न मन स्वधर्म पालन में।
१५ पराया क्लेश हरने में।
१६ दृढ चित्त होकर सान्सारिक क्लेश सहने में
१७ यश भाजन बनने में।
१८ पुस्तकावलोकन में।

उसकी पदोन्नति क्यों न हुई।

२ काम करते में सदा बुरबुराता रहा।
३ सब काम में पीछे रहा।
४ काम करने को मनथा परन्तु शऊर नथा।
५ अपने बल का उसे ज्ञान न था।
६ उस के रुधिर में दृढ़ता का अभावथा।
७ बुरी पुस्तकें पढ़कर वह नष्ट होगया।
८ तनक से काम को बार २ पूछकर करता था।
९ उसको यह बहाना खूब याद था कि याद नहीं रही।
१० आगे बढ़ने की उसने कभी हिम्मत नहीं की।
११ काम में उस का मन कभी न लगा।
१२ बार २ भूल करने परभी उसने कुछ न सीखा।
१३ उसे अभिमान था कि छोटे कामों की अपेक्षा बढ़िया काम वह खूब कर सकता है।
१४ नीच लोगों से वह मित्रता रखता था।
१५ साधारण मनुष्य रहने में उसे सन्तोष था।
१६ अधूरे कामों में उसने अपनी योग्यता गंवादी।
१७ अपने बल भरोसे उसने एक भी काम नहीं किया।
१८ किसी बात का भेद जानना उसे कभी अच्छा नहीं लगा
१९ ऊट पटांग विचारों में मन लगा कर वह अपने मन की शक्ति खो बैठा।
२० परिश्रम के काम को बातों में टरकाना चाहा।
२१ चिल्लाने और गाली देने में उसने अपनी चतुराई समझी
२२ द्रव्य और नामवरी की अपेक्षा हंसी खुशी मन बहलाना उसे अधिक पसन्द था।
२३ उसने यह नहीं समझा कि उसका वर्तमान वेतन उस का पूर्ण वेतन नहीं है।

इनके दिन न फिरेंगे।

१ आलसियों के।
२ डरपोकों के।

३ नीचे मन वालों के।
४ मूर्खों के।
५ दुर्बलों के।
६ बकवादियों के।
७ दुष्टलोगों के
८ समय पर तयार न होने वालों के।
९ मन के लड्डू खाने वालों के।
१० उकताने वालों के।
११ सुस्त और बेपरवाहों के।
१२ निराधारों के।
१३ संकट से भय करने वालों के।
१४ हिम्मत न रखने वालों के।
२७ आत्मोन्नति का विचार न रखने वालों के। समय की कदर न करने वालों के। बुनियादी काम में खर्च की किफायत निकालने वालों के।

भाग्य क्यों न चमका।

१ उसका लक्ष्य ठीक नथा।
२ हिम्मत पर सौदा टिकाने की उस में शक्ति नथी।
३ वह बहुधंधी था।
४ उसे विश्वास था कि बंधे हुए रोजगार में कुछ चेष्टा करनी नहीं होती।
५ वह आप पुल बांधता था और दूसरे पार उतर तेथे।
६ हुक्का पीना और गप्पलगाना उसे विशेष प्रियथा।
७ दिखावटी ठाठ सजाना उसने लाभदायक नहीं समझा।
८ अपने काम में उसने अपना पूराबल नहीं लगाया।
९ वह मुनीम और गुमाश्तों के भरोसे रहा।
१० व्यवसाइयों के साथ मिले रहने की उस में अकल नथी

११ तत्काल सोचना और फैसला करना इससे न बन पड़ता था।

बहुतेरे ग्राहक उसके स्वभाव से बिगड़ कर साथ वाले व्यापारियों के यहां जा मुड़े।

१३ वह लखपती बनना तो चाहताथा परन्तु परिश्रम करने से डरता था।

१४ वह अपने मंदभागी रहने का कारण ईश्वर अथवा पड़ौसियों को समझता था।

१५ नये ढंग से काम चलाना उस से बन नहीं पड़ता था

१६ सिलसिले वार काम करने की क्रिया उसको न भातीथी

१७ अल्पज्ञान उसे बहुत बातों का था परन्तु पूरा ज्ञान किसी का नथा।

१७ उसे अभिमान था कि उसकी बराबर दूसरा समझदार नहीं है।

१८ काम का नाम बढाने में खर्च करना उसे लाभदायक न जान पड़ा।

१९ उसने अयोग्य रिश्तेदारों को जिम्मेदारी के काम सौंप दिये।

२० वह भला और ईमानदार तो था परन्तु व्यापार को व्यापार के ढंग से नहीं कर सकता था।

२१ व्यापार बागके फूल उसे अच्छे लगते थे कांटों से वह घबड़ाता था।

२२ वह यही कहा करता था कि उसने यह न करके यह किया होता।

सर्व प्रिय होना होतो।

१ औरों के सहायक बनो।

२ मिलन सारी सीखो।

३ और की बात कान देकर सुनो।

४ सबको प्रसन्न करना सीखो।

५ उदार और गंभीर बनो।

६ निष्कपट और सच्चे हो जाओ।

७ दूसरों को सहारा देनेके लिये तयार रहो।

८ अपनी ही बातें सर्वदा न किया करो।

९ अपने बल भरोसे रहो।

१० दूसरों के काम में अनुराग दिखाओ.

११ सर्वदा अच्छी आशा रक्खो।

१२ लोगों के नाम और चिहरे याद रक्खा करो

१३ वादानुवाद न करो न ताना मारो।

१४ लोगों के गुण देखो बुराइयों को भूल जाओ।

१५ किसी के द्वारा तुमें दुःख पहुंचाहोतो उसे भूलजा परन्तु उपकारी को कभी न भूलो।

१६ तनदुरुस्ती बनायेरहो इसी से तुमारा बल और सा बढेगा।

१७ दूसरों की सफलता पर वैसी ही प्रसन्नता प्रक करो जैसी अपनी पर करते हो।

१८ आमोद प्रमोद करो परन्तु वाहियात न बको।

१९ सर्वदा स्त्रियों का आदर करो और उन्हें सहायता द

२० दूसरों के हक और तबियत का ध्यान रक्खो।

२१ हंसमुख होकर मीठा बोलो, ढांढस दो।

२३ कठिनता आपड़ने पर धीरज न छोड़ो।

२४ ऐसी दिल्लगी न करो जिससे किसी का मन दुखे।

२५ हिम्मत बांधके विपत्तिोंकाटो, जिस बात का उपा नहोसके उसे धीरज से सहन करो।

२६ जाति पांति का विचार न करके सब को अपना भा समझो।

२७ अपनी समझ का हठ छोड कर दूसरों की सम्मति का भी ध्यान देकर सुनो।

२८ उन्नति करना अच्छा समझो परन्तु दूसरों को गिराकर आग न बढो।

२९ जैसा अच्छा व्यवहार तुमारे अपने समान तथा अपने बडे लोगों के साथ है वैसाही अपने से छोटे लोगों के साथ भी रक्खो।

गरीबी का कारण॥

१ वे आमदनी से अधिक खर्च करते हैं।
२ वे लोगों की धड़काधड में आजाते हैं।
३ "पहिले काम पीछे विश्राम" वे इस कहावत का उलटते हैं।
४ वे अपने खर्च का हिसाब नहीं रखते।
५ वे आमोद प्रमोद में लिप्त रहते हैं और खूब खर्च करते हैं।
६ जल्दी धनी होजाने के लिये जूआ और सट्टा किया करते हैं।
७ आने पाई के नफे को वे नफा नहीं समझते।
८ वे नामवरी को पचते हैं अपने बलको नहीं देखते।
९ असली भलमनसाहत कायम रखने के लिये वे स्वेता ठगाई खा लेते हैं।
१० जो काम कल पर छोड़ा जा सकता है उसे आज नहीं करते।
११ वे अपने दोस्तों की जमानत करलेते हैं वे देनलेन करते समय तमस्सुक या इकरार नामा नहीं लिखाते
१२ वे कर्ज लेकर गुजर करना अच्छा समझते हैं परन्तु अपनी नामवरी से घट कर काम करना ठीक नहीं समझते।
१३ घर रहन करते समय वे यह नहीं समझते कि वे किसी दिन घर से निकाल दिये जायंगे।
१४ समय कुसमय के लिये चार पैसे रखना विचारते २ कुसमय आपहुंचता है।

१५ सेठजी भले आदमी हैं परन्तु भले व्यापारी नहीं है
१६ उन्हों ने अपनी लडकियों को केवल गहने और
पहिनना सिखाया ।
१७ वे नहीं जानते थे कि उनकी एक फुजूल खर्ची स
की आदत विगाड देती है ।
१८ चन्दा लिखने और किश्तोंद्वारा चुकाने का इन्हें
शौक है ।
१९ जिसकामको वे करते और समझते हैं उस में नफा
माना उन से वन नहीं पडता और जिस काम को वे बि
नहीं समझते उस में नफे की आशा रखते हैं ।

जीतेगा कौन ॥

१ जो कठिनाइयों से न डरेगा ।
२ जो अपने लक्ष्यको न छोडेगा ।
३ जो अपने कार्य की जड मजबूत रक्खेगा ।
४ जो नर या नारी निष्काम कर्म कररहे हैं ।
५ जो सबबात की तह में पहुंच कर काम से हाथ ल
ता है ।
६ जो परिश्रम से नहीं मुडता और यह कहता है " का
र्यं वा साधयेयं शरीरं वा पातयेयम् ।
७ जो मार्ग के कांटों को फूलों के समान समझता है ।
८ जो सचमुच काम करता है और खयाली पुलाव न
पकाता ।
९ जो निडर है तथा जिसका परमात्मा और अपने कर्त
व्य में दृढ विश्वास है ।
१० जिसके उच्चविचार हैं तथा उनके अनुसार चलने
हानि से नहीं डरता ।
११ जो नौकर तनख्वा के मूल्य से अधिक काम कर दिख
ता है ।

२ जो भारी काम करने का साहस रखता है और परिश्रम [illegible]हीं घबड़ाता।

३ जो उत्साही मनुष्य अपने कार्य साधन के लिये पद [illegible] पराक्रम लगाने में कसर नहीं छोड़ता।

१४ जो कर्मचारी अपने कार्य में पूर्णता, निरालस्यता, शी[illegible], दयालुता, और उदारता दिखाने के अवसर देखता है।

१५ जो कठिनता और सरलता दोनों दशा में स्थिर बुद्धि [illegible]ता है।

१६ निराशता का विचार जिसे स्वप्न में भी नहीं, अपना [illegible] खुले खजाने करता है, जो अपने काम, ध्यान और जीवन [illegible] सफलता की पूर्ण आशा किए हुए हैं।

१७ स्त्री पुरुष या बच्चा जो किसी के बल भरोसे काम नहीं [illegible]ता और केवल अपने आपे पर विश्वास करता है वह सब [illegible] में अवश्य जीतता है।

दुकान क्यों न चली !

१ दुकान दार घर की फिक्र में रहता था।

२ उस में दुकानदारी की क्रिया नथी।

३ वह समय की बात करना न जानता था।

४ वह ग्राहक की परख करने में असमर्थ था।

५ पहिले तखमीना बांधकर दुकान शुरू नहीं की।

६ वह जानता तो बहुत था पर अपना गुण प्रकाश नहीं [illegible] सकता था।

७ ग्राहक को काबू में लाने का ढंग उसको आता न था।

८ ग्राहक की कड़ुई बात को वह हंसकर नहीं टाल सक[illegible]था।

९ दुकानदारी में उसका पूरा मन नहीं था।

१० वह न किसी की सलाह मानता था और न अपनी समझ [illegible] भरोसा करता था।

दूसरे दुकानदारों को लज्जित करने का उपाय सोचा करता था।

१२ वकता वहुत था परन्तु मतलव न समझा सकताथा।

१३ वह काम करने में झिझकताथा।

१४ उसे यह भरोसा नथा कि वह चाहे जैसे ग्राहक को पटा सकता है।

१५ ग्राहक माल में जो दोष निकालताथा दुकानदार उन दोषों का उत्तर देना नहीं जानताथा।

१६ वडे हेरफेर से वातें करताथा।

१७ मुलाकात करके काम निकालने के वदले वह सन्देशों से काम निकालना चाहताथा।

१८ ग्राहक का वुरा खयाल हटाने में उसे वडी देर लगतीथी

१९ माल को व्यवहार करनेवालों के लाभ हानि पर उसे ध्यान न रहताथा।

२० भलमनसाहत का उस में अभाव था ग्राहकों से उसका व्यवहार सर्वदा रूखा होताथा।

२१ वह यही कहाकरताथा कि अमुक मौके पर दुकान होती तो वडी विक्रीहोती।

२२ वह एक सौदे की वात पक्की न करके ग्राहक को कई प्रकार के सौदों से ललचाताथा।

२३ वह पुराना और घटिया माल दिखा कर ग्राहक का मन विगाड देताथा।

२४ वह ग्राहकों को अपनी गरीवी हालत दिखलाताथा।

२५ एक भी ग्राहक विना सौदा लिये चलाजाय तो वह बड़ा निराश और साहस हीन होजाताथा।

२६ जिस सौदेकी वह दुकान करता है उस में उस का मन नहीं था।

२७ वह चाहता है कि अमुक माल की दुकान होती तो नफा मिलता।

२८ वह अपने सौदेकी इतनी तारीफ कर डालताथा कि लोग उसको महंगा समझ जातेथे।

२९ अपनी दुकान की यह प्रतिष्ठा का कारण नहीं समझता था।
३० उसे ख्याल था कि लोग उसको बनियां कहने लगेंगे।
३१ ग्राहक से सौदा पटगया तो दुकानदार बड़ी सज्जनता से व्यवहार करता था परन्तु जो ऐसा न हुआ तो उसके साथ महा कटु भाषण करने लगता था।
३२ वह ग्राहक के साथ दुम दबाए हुए कुत्ते की तरह गिड़ गिड़ाते हुए बात करता था।
३३ मूर्ख-चतुर, भोले और स्याने सर्व प्रकार के ग्राहकों से वह एकही तरह की बातें करता था।
३४ सौदेकी बातें करना तो उसको आता था, परन्तु तोड़ करने का ढङ्ग उसको याद न था।

सज्जनोचित धर्म्म।

१ कृपालु बनो।
२ गाली मत बको।
३ दूसरों को सुखी करने की चेष्टा करो।
४ बूढ़ों का आदर करो।
५ अश्लील चर्चा न छेड़ो।
६ अपने बल और ज्ञान की शेखी मत बघारो।
७ केवल धनी लोगों का ही आदर करना उचित न समझो
८ दूसरे के हक का ध्यान सर्वदा रक्खो।
९ लोगों की बातें काटने में अपनी चतुराई न दिखाओ
१० वायदा पूरा करो, निमंत्रण स्वीकार किया है तो जाओ, लोकाचार के अनुसार जहां तुमारी, हाज़री ज़रूरी है वहां अवश्य पहुंचो।
११ दूसरे के अद्भुत स्वभाव और अनोखे चलन की कभी हँसी न करो।
१२ किसी सभा में यदि दूसरे मनुष्य को तुमसे अधिक

बड़ी लज्जा है।

१ सुस्त, काहिल और दुश्चरित्र होना।
२ निर्धन, मैले और भद्दे रहना।
३ कमीना, रूखा और टेढ़ा होना और टेढ़ा व्यवहार रखना
४ तुमको जो बात आती है उसे गुप्त रखना।
५ भूखे पेट सो जाना, परन्तु काम न करना।
६ घर और शरीर शुद्ध न रखना।
७ सुजन समाज की नियमावली न जानना।
८ जिस मार्ग पर चलने से पद मर्य्यादा प्राप्ति की हो उसे तुच्छ समझना।
९ राजनैतिक बातों की जिम्मेदारी लेने से हिचकना, तथा सर्व साधारण सम्बन्धी कार्यों में योग न देना।
१० जिन बातों से देश की उन्नति होरही है उनको न समझना।
११ देश की वर्तमान दशा पर चतुराई से वार्तालाप न कर सकना।
१२ तनदुरुस्ती रखने वाले नियमों को न जानना।
१३ स्वस्थ और विद्वान की भांति जीवन व्यतीत न करना।
१४ जिन को हम रोज देखते हैं, और काम में लाते हैं, उनका पूरा तत्व न समझना।
१५ संसार में क्या होरहा है एक देश का अन्य देशों से क्या सम्बन्ध है यह बात न जानना।
१६ आज कल की सभ्यता में समाचारपत्र, मासिक पत्र, और पुस्तकालय से जो लाभ है उनसे वंचित रहन।
१७ प्रतिनिधि चुनने में अंध परम्परा वर्त्तना।
१८ किसी लाभ अथवा व्यसन में ऐसा लिप्त होना कि मनुष्य निकम्मा और घृणास्पद हो जाय।
१९ सृष्टि के इतिहास को न समझना, जीव, वनस्पति और अन्य पदार्थों का तत्व न जानना।

२० अपने देश की दशा, प्राचीन इतिहास, उपज और प्रजा का पूर्ण वृतांत न जानना।
२१ मनुष्यों के सुधारने के लिये जो चेष्टा हो रही है उनमें तन, मन, धन से सहायता न करना।
२२ ऐसे नगर में रहना, जहां पाठशाला, पुस्तकालय, अजायब-घर, चित्रशाला तथा सभा होती हो परन्तु इन से कुछ लाभ न उठाना।

व्यापारी क्यों बिगड़ गया ?

१ उसमें आत्मबल न था।
२ उसे फिक्रों ने खालिया।
३ उसके पास पूंजी नथी।
४ वह आत्मनिर्भर न था।
५ वह तोड न कर सकता था।
६ उसे पराई बात बहुत बुरी लगती थी।
७ "ना" करना उसको न आता था।
८ वह थकते २ रहजाता था।
९ वह अपनी पदमर्य्यादा न जान सका।
१० उसने झूठे वहम न त्यागे।
११ एक बार के थोडे से नफे में वह फूल गया।
१२ लोभ ने उसकी नाव डुबाई।
१३ उसने पढ़ा तो बहुत पर गुना नहीं।
१४ वह किसी की सलाह न मानता था।
१५ वह अपनी निर्बलता को छिपा न सका।
१६ वह सिर पर आ टूटते के समय किसी काम को करता था।
१७ उसमें व्यापार करने की शक्ति न थी।
१८ व्यापार में उसे सच्चा प्रेम न था।
१९ जिस झगड़े में वह पड़ा उसे सुलझा न सका।

बड़ी लज्जा है।

१ सुस्त, काहिल और दुश्चरित्र होना।
२ निर्धन, मैले और भद्दे रहना।
३ कमीना, रूखा और टेढ़ा होना और टेढ़ा व्यवहार रखना
४ तुमको जो बात आती है उसे गुप्त रखना।
५ भूखे पेट सो जाना, परन्तु काम न करना।
६ घर और शरीर शुद्ध न रखना।
७ सुजन समाज की नियमावली न जानना।
८ जिस मार्ग पर चलने से पद मर्य्यादा प्राप्ति की हो उसे तुच्छ समझना।
९ राजनैतिक बातों की जिम्मेदारी लेने से हिचकना, तथा सर्व साधारण सम्बन्धी कार्यों में योग न देना।
१० जिन बातों से देश की उन्नति होरही है उनको न समझना।
११ देश की वर्तमान दशा पर चतुराई से वार्तालाप न कर सकना।
१२ तनदुरुस्ती रखने वाले नियमों को न जानना।
१३ स्वस्थ और विद्वान की भांति जीवन व्यतीत न करना।
१४ जिन को हम रोज देखते हैं, और काम में लाते हैं, उनका पूरा तत्व न समझना।
१५ संसार में क्या होरहा है एक देश का अन्य देशों से क्या सम्बन्ध है यह बात न जानना।
१६ आज कल की सभ्यता में समाचारपत्र, मासिक पत्र, और पुस्तकालय से जो लाभ है उनसे वंचित रहन।
१७ प्रतिनिधि चुनने में अंध परम्परा वर्तना।
१८ किसी लाभ अथवा व्यसन में ऐसा लिप्त होना कि मनुष्य निकम्मा और घृणास्पद हो जाय।
१९ सृष्टि के इतिहास को न समझना, जीव, वनस्पति और अन्य पदार्थों का तत्व न जानना।

२० अपने देश की दशा, प्राचीन इतिहास, उपज और प्रजा का पूर्ण वृत्तांत न जानना।

२१ मनुष्यों के सुधारने के लिये जो चेष्टा हो रही है उनमें तन, मन, धन से सहायता न करना।

२२ ऐसे नगर में रहना, जहां पाठशाला, पुस्तकालय, अजायब-घर, चित्रशाला तथा सभा होती हो परन्तु इन से कुछ लाभ न उठाना।

व्यापारी क्यों बिगड़ गया ?

१ उसमें आत्मबल न था।
२ उसे मित्रों ने खा लिया।
३ उसके पास पूंजी न थी।
४ वह आत्मनिर्भर न था।
५ वह जोड़ न कर सकता था।
६ उसे पराई बात बहुत बुरी लगती थी।
७ 'ना' करना उसको न आता था।
८ वह बनते २ रह जाता था।
९ वह अपनी परिमर्यादा न जान सका।
१० उसने झूठे वहम न त्यागे।
११ एक बार के थोड़े से घाटे में वह टूट गया।
१२ चोर ने उसकी नाव डुबाई।
१३ उसने पढ़ा तो बहुत पर गुना नहीं।
१४ वह किसी की सलाह न मानता था।
१५ वह अपनी निर्बलता को छिपा न सका।
१६ वह सिर पर आ टूटने के समय किसी काम को करता था।
१७ उसमें व्यापार करने की शक्ति न थी।
१८ व्यापार में उसे सच्चा प्रेम न था।
१९ जिस झगड़े में वह पड़ा उसे सुलझा न सका।

२० कूड़े करकट को उसने अलग न किया।
२१ उसका काम नियमानुसार न होता था।
२२ किसी कामको उसने पूर्णता पर नहीं पहुँचाया।
२३ आराम तलबी उसे पसन्द थी वह काम से घबड़ाता था।
२४ वह नातजुर्बेकार की सलाह पर गया।
२५ उसे अपनी समझ का विश्वास न था।
२६ वह अपने ज्ञान से अपना बल न बढा सका।
२७ दूसरों के साथ आगे बढचलने की हिम्मत उसमें न थी।
२८ वह जानता तो बहुत था परन्तु उससे लाभ उठा न सकता था।
२९ माल बर्तने वालों का नफा नुकसान उसने न विचारा
३० कच्ची समझ के जमाने ही में उसने स्वतंत्र व्यापार आरम्भ किया॥

व्यापार क्यों न चमका?

१ उसने सब काम अपने हाथों से ही करने चाहे।
२ उसने लोगों में अपना नाम और काम उजागर नहीं किया।
३ वह समय के अनुसार न चल सका।
४ नियमानुसार कार्य करना उसे झंझट जान पड़ता था।
५ उसका सिद्धान्त था "चमडी जाय पर दमडी न जाय"
६ माल के दाम वह समय पर न चुका सका इसी से उसका विश्वास हट गया।
७ अन्य व्यपारियों के साथ मिलकर रहना उसे न बन पड़ा।
८ छोटी २ गलतियों को उसने योंही टाल दिया।

९ वह पुराने चलन का माल रखता था और ग्राहकों से रूखी बातें करता था।

१० तुच्छ बातों के फैसले में उसने काम की बातें भुलादीं

११ एक बार की नफा ने उनको फुला दिया और सिर चकरा दिया।

१२ उसको यह विश्वास न था कि उदार नीति रखने से कारबार बढ़ता है।

१३ उसका ख्याल था कि माल का विज्ञापन द्वारा प्रचार करना रुपया बरबाद करना है।

१४ दगा और फरेब से ग्राहकों को ठगकर उसने अपना विश्वास नष्ट करडाला।

१५ जिन लोगों में योग्यता न थी उनको जिम्मेदारी के काम पर लगा दिया।

१६ उसने ग्राहक का मन प्रसन्न करने की चेष्टा कभी न की, अपनाही नफा देखा।

१७ उसकी नीयत घटती की ओरही थी उसका कथनथा " समय बड़ा टेढ़ा है " " रुपये की गुंजायश नहीं है" " बजार बड़ा मद्दा है"

१८ अन्य दुकानदार क्यों बढ़ते जाते हैं इसका कारण जानने की उसने चेष्टा न की और न उनके व्यापार तत्व को सीखा।

१९ उसे हर काम में झेरा और टोटा दिखाई देता उसके नौकर चाकर भी वैसेही होगये।

२० तजवीज, योजना उसको आता था परन्तु काम करना उसके बूते से बाहिर था।

२१ आदमियों की उसको परख न थी इसलिये कामकाजी आदमी उसको न मिल सके।

२२ वह अपने ग्राहकों की आवश्यकता तथा पसन्द के अनुसार माल न रखता था।

२३ जिस चीज में उसको जियादा नफा मिलने की आशा होती थी उन्हीं को रखता था।

२० कूड़े करकट को उसने अलग न किया।
२१ उसका काम नियमानुसार न होता था।
२२ किसी कामको उसने पूर्णता पर नहीं पहुँचाया।
२३ आराम तलबी उसे पसन्द थी वह काम से घव. डाता था।
२४ वह नातजुर्बेकार की सलाह पर गया।
२५ उसे अपनी समझ का विश्वास न था।
२६ वह अपने ज्ञान से अपना बल न बढा सका।
२७ दूसरों के साथ आगे बढचलने की हिम्मत उसमें न थी।
२८ वह जानता तो बहुत था परन्तु उससे लाभ उठा न सकता था।
२९ माल वर्तने वालों का नफा नुकसान उसने न विचारा
३० कच्ची समझ के जमाने ही में उसने स्वतंत्र व्यापार आरम्भ किया॥

व्यापार क्यों न चमका?

१ उसने सब काम अपने हाथों से ही करने चाहे।
२ उसने लोगों में अपना नाम और काम उजागर नहीं किया।
३ वह समय के अनुसार न चल सका।
४ नियमानुसार कार्य करना उसे झंझट जान पडता था।
५ उसका सिद्धान्त था "चमडी जाय पर दमडी न जाय"
६ माल के दाम वह समय पर न चुका सका इसी से उस. का विश्वास हट गया।
७ अन्य व्यपारियों के साथ मिलकर रहना उसे न बन पडा।
८ छोटी २ गलतियों को उसने योंही टाल दिया।

९ वह पुराने चलन का माल रखता था और ग्राहकों से रूखी बातें करता था।

१० तुच्छ बातों के फैसले में उसने काम की बातें भुलादीं

११ एक बार की नफा ने उनको फुला दिया और सिर चकरा दिया।

१२ उसको यह विश्वास न था कि उदार नीति रखने से कारबार बढ़ता है।

१३ उसका ख्याल था कि माल का विज्ञापन द्वारा प्रचार करना रुपया बरबाद करना है।

१४ दगा और फरेब से ग्राहकों को ठगकर उसने अपना विश्वास नष्ट करडाला।

१५ जिन लोगों में योग्यता न थी उनको जिम्मेदारी के काम पर लगा दिया।

१६ उसने ग्राहक का मन प्रसन्न करने की चेष्टा कभी न की, अपनाही नफा देखा।

१७ उसकी नीयत घटती की ओरही थी उसका कथनथा "समय बड़ा टेढ़ा है" "रुपये की गुंजायश नहीं है" "बजार बड़ा मद्दा है"

१८ अन्य दुकानदार क्यों बढ़ते जाते हैं इसका कारण जानने की उसने चेष्टा न की और न उनके व्यापार सत्व को सीखा।

१९ उसे हर काम में झेरा और टोटा दिखाई देता था, उसके नौकर चाकर भी वैसेही होगये।

२० तजवीज बांधना इसको आता था परन्तु काम करना उसके बूते से बाहिर था।

२१ आदमियों की उसको परख न थी इसलिये काम काजी आदमी उसको न मिल सके।

२२ वह अपने ग्राहकों की आवश्यकता तथा पसन्द के अनुसार माल न रखता था।

२३ जिस चीज में उसको जियादा नफा मिलने की आशा होती थी उन्हीं को रखता था।

जीने से मरना भला क्यों समझा ?

१ उसने आमोद प्रमोद के लिये समय नहीं निकाला।
२ उसे रात दिन कमाने की चिन्ता थी।
३ भाई बन्धुओं के दुःख सुख बटाने का उसने विचार न किया।
४ उसने धन कमाया परन्तु तन और मन सुखाया।
५ जीवन का सार उसने धन को ही समझा।
६ वह चौबारे पर सोने का स्वाद न जानता था।
१० तहखाने में घुस बैठना उसे अच्छा लगता था।
११ पुराने ढँग पर चले जाना उसे पसन्द था, नयी बात एक भी न कर सकता था।
१२ उसने पुराने दोस्त रुठा दिये।
१३ उसने नये दोस्त पैदा न किये।
१४ अपने नित्य के कामों में आनन्द प्राप्त करना उसने नहीं सीखा।
१५ उसने केवल लेना पढ़ा, देना नहीं सीखा।
१६ जो कुछ उसको प्राप्त था, उससे वह राजी न था।
१७ दूसरों के पास अधिक देखकर वह जलता था।
१८ वह अगली पिछली बातों के सोच में रहता था, और वर्तमान आनन्द का विचार न रखता था।
१९ जीवन की घडी २ को उसने घडी मानकर सुख नहीं समझा।
२० भविष्याति की आशाओंको व्यर्थ होते देखकर दुखी रहा।

घर द्वार क्यों छूटा ?

१ जूए की चाट थी

२ दाम चुकाना भुला दिया ।
३ उनका सिद्धान्त था :—
" बस डाल माल धनको
कौड़ी न रख कफनको ,,
४ थोड़ा २ सब काम में चन्दा देना उनका नियम था ।
५ सस्ता देखकर बेजरूरत भी माल खरीद लेते थे ।
६ " हमारा बूता नहीं ,, ऐसा कहना और 'नाहीं' करना उन से न आता था ।
७ आगा पीछा सोच कर तथा अपना बल विचार कर खर्च करने की योग्यता उनमें नथी ।
८ शराब और तमाकू में इतना रुपया उठा दिया कि घर गिरवी रखना पड़ा ।
९ बाप की बड़ी इच्छाथी कि इस जान का बीमा करालें । परन्तु कराते २ रहगये ।
१० वे यह बात नहीं जानते थे कि कर्ज लेना सहज है चुकाना कठिन है ।
११ इकरारनामा अथवा साझे की शर्तें उन्हों ने लिखाकर रखना नीच कर्म समझा ।
१२ लड़कियों को गहना कपड़ा खूब बढ़िया पहिरना सिखा दिया परन्तु किसी प्रकार का काम उनको न सिखाया ।
१३ लाटरी और सट्टा करके शीघ्र धनी होने की इच्छा से उन्हों ने बची बचाई पूंजी भी ठिकाने लगादी ।
१४ वे नहीं जानते थे कि अपने कारिन्दों और गुमाश्तों तथा मुख्तारों को पूरे अधिकार देना अपने को उन का गुलाम बनाना है ।
१५ वादे पर देना न चुकाकर वे उसे काल पर टालते रहे ।
१६ बच्चों को मन माना रुपया देकर उन्हें फुजूल खर्च बनाया और घर उजाड़ा ।

१७ बिना देखे भाले उन्हों ने जरूरी कागज़ों पर दस्तखत कर दिये ।

१८ अपनी नामवरी की खातिर उन्हों ने जायदाद गिरवी रखकर अपने ठाट बनाए रक्खे आखिरकार दिवाला निकालना पड़ा ।

१९ जब जूते की कीलें चुभने लगीं तो वे जानते नथे कि किस कीलको निकलवायें । शौक के काम अब जरूरी काम होगये ।

२० उन्हों ने अपनी बचत का रुपया न सेविंग बैंक में रक्खा, न बीमा कराया ।

२१ नकद दाम पर चीज खरीदने की अपेक्षा उन्हें सौदागरों के यहां हिसाब रखना अधिक पसन्द था । देखते२ नामकी रकम बढती जाती थी और उसका चुकाना उनसे बन नहीं पडता था ।

२२ जिन के साथ उनका हिसाब था उनसे वे रुपये की रसीद मांगना नीचता समझते थे ।

२३ वे अपना खर्च बहुत रखते थे । जो उनकी सामर्थ से बहुत अधिक होता था क्योंकि वे लोगों को अपना बडप्पन दिखाना अधिक पसन्द करते थे ।

२४ व्याह शादी क्रिया कर्म में वे अधिक खर्च इस लिये करते थे कि उनके लडके लडकियों के संबंध बडे घरानों से हों ।

२५ उनके पास कई बार इतना रुपया होगया कि वे चाहते तो घर दुकान गिरवी से छुडा सकते थे परन्तु वे सोचते रहे कि अभी मियाद दूर है ॥ वक्त पर देखा जायगा ॥

घरवाली से क्यों न बनी ?

१ उसे बच्चे अच्छे न लगते थे ।

२ वह अपनी घरवाली से प्रेमालाप न करता था।
३ स्त्री साथ लेकर उसने कहीं की यात्रा न की।
४ घर गृहस्थी की बातों में स्त्री से कथोपकथन नहीं किया
५ स्त्री को वह मूर्खा और नीचमना समझता रहा।
६ रुपया पैसा स्त्री को इस प्रकार देता था, जैसे किसी भिखमंगे को देता हो।
७ स्त्री के भाई भतीजों का आदर नहीं किया।
८ उसने यह न सोचा कि स्त्री सुधर भी सकती है, और बिगड़ भी सकती है।
९ उसने यह न सोचा कि स्त्री भी अपनी तारीफ और खुशामद चाहती है।
१० वह स्त्री को सर्वदा दासी समझता रहा।
११ वह सोचता था कि उसकी स्त्री ऐसी सुन्दर होगी-ऐसी चतुर होगी परन्तु वह वैसी न निकली।
१२ वह समझता था कि स्त्री रात दिन कामही करतीरहे
१३ वह अपनी स्त्री के साथ ऐसा व्यवहार रखता था जो, वह किसीअन्य स्त्रीके साथ कदापि नहीं कर सकता था।
१४ घर में उसकी बोल चाल और काम काज और तरह के होते थे, बाहिर और तरह।

राजा नवाब तथा बड़े आदमियों-

के सिद्धान्त।

१ मन हानि सा करो।

२ मानलो कि और सबलोग कुसूर करते हैं।

३ किसी को झुटलाने या उसका मन दुखाने में कभी मत हिचको।

४ अपने मतलबों की बातें करो, संसार मतलब से खाली नहीं है।

१७ विना देखे भाले उन्हों ने जरूरी कागजों पर दस्तखत कर दिये।

१८ अपनी नामवरी की खातिर उन्हों ने जायदाद गिरवी रखकर अपने ठाठ बनाए रक्खे आखिरकार दिवाला निकालना पडा।

१९ जब जूते की कीलें चुभने लगीं तो वे जानते नथे कि किस कीलको निकलवावें। शौक के काम अब जरूरी काम होगये।

२० उन्हों ने अपनी बचत का रुपया न सेविंग बैंक में रक्खा, न बीमा कराया।

२१ नकद दाम पर चीज खरीदने की अपेक्षा उन्हें सौदागरों के यहां हिसाब रखना अधिक पसन्दथा। देखते२ नामकी रकम बढती जाती थी और उसका चुकाना उनसे बन नहीं पडता था।

२२ जिन के साथ उनका हिसाब था उनसे वे रुपये की रसीद मांगना नीचता समझते थे।

२३ वे अपना खर्च बहुत रखते थे। जो उनकी सामर्थ से बहुत अधिक होता था क्योंकि वे लोगों को अपना बडप्पन दिखाना अधिक पसन्द करते थे।

२४ ब्याह शादी क्रिया कर्म में वे अधिक खर्च इस लिये करते थे कि उनके लडके लडकियों के संबंध बडे घरानों से हों।

२५ उनके पास कई बार इतना रुपया होगया कि वे चाहते तो घर दुकान गिरवी से छुडा सकते थे परन्तु वे सोचते रहे कि अभी मियाद दूर है॥ वक्त पर देखा जायगा॥

घरवाली से क्यों न बनी ?

१ उसे बच्चे अच्छे न लगते थे।

२ वह अपनी घरवाली से प्रेमालाप न करता था।

३ स्त्री साथ लेकर उसने कहीं की यात्रा न की।

४ घर गृहस्थी की बातों में स्त्री से कथोपकथन नहीं किया

५ स्त्री को वह मूर्खा और नासमझ समझता रहा।

६ रुपया पैसा स्त्री को इस प्रकार देता था, जैसे किसी भिखमंगे को देता हो।

७ स्त्री के भाई भतीजों का आदर नहीं किया।

८ उसने यह न सोचा कि स्त्री सुधर भी सकती है, और बिगड़ भी सकती है।

९ उसने यह न सोचा कि स्त्री भी अपनी तारीफ और खुशामद चाहती है।

१० वह स्त्री को सर्वदा दासी समझता रहा।

११ वह सोचता था कि उसकी स्त्री ऐसी सुन्दर होगी-ऐसी चतुर होगी परन्तु वह वैसी न निकली।

१२ वह समझता था कि स्त्री रात दिन काम ही करती रहे

१३ वह अपनी स्त्री के साथ ऐसा व्यवहार रखता था जो, वह किसी अन्य स्त्री के साथ कदापि नहीं कर सकता था।

१४ घर में उसकी बोल चाल और काम काज और तरह के होते थे, बाहिर और तरह।

राजा नवाब तथा बड़े आदमियों-

के सिद्धान्त।

मत ... सा करो।

२ मानलो कि और सबलोग कुसूर करते हैं।

३ किसी को झुटलाने या उसका मन दुखाने में कभी मत हिचको।

४ अपने मातहतों की बातें करा, संसार मतलब से खाली नहीं है।

५ सभ्यता । सुजनता का भय न करो ये बातें पर गेरे लोगों के लिये हैं ।

५ कोई बातें करता हो तो उसे टोकने में हिचका न करो क्योंकि लोग आपकी बातें सुनने के लिये आते हैं ।

६ लोग आपका आदर करते हैं आपको माल देते है यह ठीक ही है आपको इसके बदले कुछ करना जरूरी नहीं है ।

७ जब आपके सामने लोग अपने काम काज और घर बार की बातें करने लगें तो उकता जाओ ।

८ आपके सामने कोई दूनकी हांकता हो, शेखी बघारता हो तो उसे ठंडा करदो ।

९ आपका कोई अपमान न कर सके इस बात पर ध्यान रक्खो । चाहे वह अपने विद्या वा बल से कितनाही बडा क्यों न हो ।

१० किसी की प्रार्थना अस्वीकार करनी हो तो बे लिहाज कहदो, दूसरेके मन बिगाडने की शंका न करो ।

११ कहीं जानापडे तो सर्वोत्तम स्थान पर बैठजाओ दूसरे लोगों को केवल ज़ुबान से कहते रहो । आइये आइये यहां बैठिये ।

१२ सर्वदा ऊंचे स्वरसे बातें करो।जोर से हँसने में किसीका लिहाज न करो । इस प्रकार का व्यवहार उच्चकुलोत्पन्न होने का चिन्ह है ।

१३ आपका मन दुखाने वाली कोई कोई घटना होजाय तो फौरन कहडालो आपसे अधिकी यदिकिसी दूसरे की मान मिल गया हो अथवा आप से बढकर कोई सज धज कर आया हो तो ईर्षा अवश्य दिखाओ ।

१४ चाहे किसी को बुरी ही लगे आप अपनी राय देनेमें मत चूको ।

१५ क्रोध आजाय तो खूब शोर मचाओ चीजें तोड़ फोड डालो । ऐसा करने से मनको शान्तिहोगी ।

१६ लोगों के धार्मिक विचार यदि आपके समान नहीं हैं तो उन विचारों की खूब निन्दा करो ।

१७ यदि कोई अपना हुनर अथवा कर्तव्य दिखावे तो उससे कहदो कि आपने इससे बड़े २ हुनर और कर्तव्य देखे हैं।

१८ लोगों की चाल ढाल और कपड़े लत्तों में दोष दिखाते रहो, और उनसे नाक मुँह सिकोडो।

१९ आपकी लोग प्रशंसा करें तो ठीक है। परन्तु दूसरों की प्रशंसा करना उनका आचरण बिगाड देताहै।इससे उनको अभिमान हो जाता है और वे बिगड़ जाते हैं।

२० नौकरों को ठीक रखने के लिये उनको सर्वदा ताडना देते रहो, उनके कामको टोकते रहो, मुँह लगाने से नौकर खराब होजाते हैं।

२१ गप मारने में न चूको। आपकी बातों से किसी का सर्वनाश ही क्यों न होजाय, परन्तु आप उस बात की चिन्ता न करके किसी के सम्बन्ध में मन आवे सो कह डालो।

२२ यह कभी न सोचो कि रानी साहिब, बेगम साहिब, या आप लौंडी साहिबा कभी मन संसार की हवा खाने को करता है। आप उनको महिलों से बाहिर न आने दो। कहते रहो " तुमारे जाने से महलों के इन्तज़ाम में खलल होगा,,।

२३ आप अपने मनका वेग कभी मत रोको, नौकर चाकर स्त्री, परिवार भलेही पीट पीछे आपकी बातों पर आंसू बहावें आप उनकी चिन्ता न कीजिये।

२४ छोटे लोगों को दावत देने की अपेक्षा उनके यहां आप चा जाना अच्छा है, इससे उन लोगों की इज्ज़त बढ़ेगी।

मातृ सेवा।

१ जिस बात से माता मन प्रसन्न होता है उस काम को अवश्य करो।

२ अपने आराम से पहिले अपनी माका आराम और सुख देखो।

३ यह न सोचो कि वह बुड्ढी होगई हैं झुर्रियां पडगई है उसको अबतक भी सुन्दर वस्तु अच्छी लगती है

४ स्मरण रक्खो कि शरीर बूढा होने से मन बूढा नहीं होता, वह अब भी अपना आदर देखकर प्रसन्न होतीहै।

२ मा जिन चीजों को पाकर प्रसन्न हो ऐसी सुन्दर साधःरण चीजों का उपहार देना बडी जरूरी बात है।

६ अपना कोई भेद उससे मत छिपाओ, और ऐसा कोई काम मत करो जिसके करने से तुमारी समझ में वह दुखी होगी।

७ तीर्थ यात्रा अथवा जिन खेल कूदों में तुम बडी बूढियों को लेजा सकते हो उनमें अपनी माको अवश्य लेजाओ।

८ माता तुमारे लिये दुख सहते २ बुड्ढी हुई है अब कोई काम उसके सिर न छोड़ो, यह उसके आराम करने का समय है।

९ इस बात को जरूर जानलो कि उसको क्या बात अच्छी लगती है, किस कर्म से वह प्रसन्न होती है, जहां तक सम्भव हो उसकी इच्छानुसार ही चलो।

१० जिस तरह से तुम अपने से ऊँचे दर्जे वाले मनुष्यों का आदर करते हो वही आदर अपनी माको दो।

११ यह कभी मत सोचो कि तुम किसी तरह सेभी अपनी मा से बड़े हो, अपने किसी आचरण सेभी यह बात मत प्रकट होने दो।

१२ उसका स्वभाव यदि चिड़चिड़ा है वा रिसेला है तो शांतिपूर्वक सेहो, सम्भव है कि तुमारी रक्षा करने की चिन्ता में ही उसकी ऐसी वान पडगई हो।

१३ तुमने जो कुछ करना विचारा है उसको अपनी मासे मत छिपाओ।

१४ इस बात को सर्वदा ध्यान रक्खो कि तुमें योग्य और समर्थ बनाने में उसने बडे २ कष्ट सहे हैं, फिर तुमसे अपनी मा की जो सेवा बने वही थोडी है।

१५ बुढ़िया की बात पुराने ढङ्ग की हो और तुमारे माजित विचारों के अनुसार न हो तोभी तुम उसको आदर पूर्वक सुनो।

१६ अपने मित्रों को सर्वदा अपनी मा द्वारा परिचित बनाओ, सब खेल तमाशों की चर्चा अपनी मासे करो, जिससे उसका मन हरा बना रहे।

१७ उसके स्नानादि तथा वस्त्रादि की सर्वदा चिन्ता रक्खो, जिससे वह सर्वदा प्रसन्न चित्त जान पड़े।

१८ यह बात स्मरण रक्खो कि तुमारी सब बातें तुमारी मा को भाती है, इस लिये तुम अपने दोस्त आशना खेल तमाशे और पढ़ने लिखनेकी सब बातें उसको सुनाते रहो।

१९ अपनी मा के धर्म विश्वास की हँसी न करो, तुमारे सिद्धान्त चाहे किसी समाज के अनुसार हों, परन्तु अपनी मा का मन दुखाना सर्वदा वर्जित है।

२० जो लड़की अपनी मा को प्यार करती है उसको प्रसन्न रखने तथा उसके लिये सब कुछ कष्ट उठानेको तयार है, वह अवश्य अच्छी ग्रहणी बनेगी।

२१ स्मरण रक्खो कि उसका जीवन तुमारे समान उत्साह भरा हुआ अब नहीं रहा, उसको किसी तीर्थ या मेले तमाशे में लेजाना, गांव से बाहर दिखाना उसके चित्त को बहुत प्रमुदित करता है।

२२ उसका शरीर अब यदि इस योग्य नहीं रहा कि वह ग्रहस्थी के धन्धे कर सके तो उसको निकम्मी मत समझो। घर के सब कामों में उसका वचन लेना उसके चित्त को प्रसन्न करता है।

२३ यत्नपूर्वक इस बातकी जांच में रहो कि उसको किसी आवश्यकता के लिये तुमसे रुपया पैसा न मांगना पड़े। उसकी इच्छा पूर्ण करने का ध्यान पहलेही से रक्खो।

बुरा खसम।

१ जो सर्वदा इस ताड में रहता है कि उसकी स्त्री कहां जाती है तो क्या करती है।
२ जो अपने घर से केवल खाने और सोने ही का काम रखता है।
३ जो अपने बच्चों को स्नेह नहीं दिखाता और का साथ नहीं देता।
४ जो छदाम २ के लिये अपनी स्त्री के प्राण खाता है!
५ जो घर में सुख लूटना तो चाहता है परन्तु ग्रहस्थ का बोझा सिर पर उठाना नहीं चाहता।
६ जो घर से जाती और आती समय अपनी स्त्री से प्रीति सम्भाषण नहीं करता।
७ जो उसको मेले तमाशेमें नहीं लेजाता, और जो लेजाता है तो वहां उससे बोलता चालता नहीं।
८ जो इस बात की चिंता नहीं करता कि उसके बच्चे स्कूल में क्या पढते है, और न घर पर कभी उनको सिखाता, या खिलाता है।
९ जो घर से बाहिर दुकान पर या अपने दफ्तर में हँसता बोलता और मगन रहता है और घर में घुसने पर भेड़िये का रूप रखलेता है।

संसार चाहता है।

१ ऐसे आदमियों को जो रिशवत न खाते हों।
२ ऐसे आदमियों को जो अपनी बात के पक्के हों।
३ ऐसे आदमियों को जो अपनी बात को रुपये से बढकर समझते हैं।
४ ऐसे आदमियों को सम्मति देकर उसके अनुसार चलते चलाते हैं।

५ ऐसे आदमियों को जो परमात्मा को सब जगह देखतेहैं
६ ऐसे आदमियों को जो काम छोटा करते हैं और योग्यता अधिक रखते हैं।
७ ऐसे आदमियों को जो मौके को हाथ से नहीं जाने देते।
८ ऐसे आदमियों को जो पापी की हिमायत नहीं करते।
९ ऐसे आदमियों को जो हज़ारों मनुष्यों में मिलजाने पर भी अलग जान पड़ें।
१० ऐसे आदमियों को जिनसे कायरपन का तनक भी असर नहीं।
११ ऐसे आदमियों को जो न पाई पर ईमान खोते हैं, न करोड़ रुपये पर।
१२ ऐसे आदमियों को जो कभी यह बात नहीं कहते कि " जिस कामको सब लोग करते हैं उसीको वे करतेहैं।
१३ ऐसे आदमियों को जो केवल अपनी उन्नति करने में ही सन्तोष नहीं मानते।
१४ ऐसे आदमियों को जो परोपकार के लिये अपना नुकसान सहने से नहीं डरते।
१५ ऐसे आदमियों को जो पूरा नापते हैं, और पूरा तोलते हैं।
१६ ऐसे आदमियों को जो दान करते समय दहिने हाथ का काम बांये को नहीं जानने देते।
१७ ऐसे आदमियों को जो दुकानदारी और धर्म मन्दिर में धर्म बर्तते हैं।
१८ ऐसे आदमियों को जो हर काम में यह नहीं कहते कि " इस काम में हमें क्या फायदा होगा "।
१९ ऐसे आदमियों को जो सब किसी से केवल स्वार्थ के लिये नहीं मिलते।
२० ऐसे पण्डितों को जिनके उपदेश केवल धन बढ़ाने के लिये होते हैं।
२१ ऐसे मनुष्यों को जो दुख सुख में मित्र का संग देते हैं।

२२ ऐसे युवक युवती जो स्वाधीनता और सदाचरण प्रताप से गर्दन उठाकर खड़े हो सकें।
२३ ऐसे सज्जन जो जानते हैं कि चालकी हुशियारी और दाव पेच खेलकर बड़े आदमी होना न चाहते हों।
२४ राज मंत्री जो अपने स्वार्थ के लिये राज नष्ट न कर देता हो।
२५ ऐसा चाकर जो चुपचाप बिना दिखाये अपना काम करता रहता हो।
२६ ऐसे वकीलको जो अपने मवक्किलका मुकदमा देखकर कहदे कि इस में जान नहीं है और अपनी फीस के लालच उसको झूंटी आशा न दे।
२७ ऐसे डाक्टर-जो कहदे कि रोग उनकी समझ में नहीं आता है। अथवा जो परीक्षा के लिये नयी दवाओं की जांच रोगी की जात पर न करें।
२८ ऐसे मनुष्य जो अपना सिद्धान्त कहनेमें न चूकें चाहे संसार भर उनके विरुद्ध क्यों न हो।
२९ ऐसे मनुष्य जो मोटा खाकर मोटा कपड़ा पहिन सकें जब कि उनके अन्य भाई हमेशा अन्याय से रुपया कमाकर चैन करें।
३० ऐसे मनुष्य जो विपत्ति और झगड़ों में फंसने पर भी अपने सात्विक भाव को न बदलें।
३१ ऐसे सम्पादक जो दूसरों के मन घायल करने वाले लेख न लिखते हो।

बन्द करो।

१ पर निन्दा।
२ कुढन।
३ समय काटने के कर्म।
४ तुमारी इच्छा के अनुसार सर्दी, गर्मी, धूप, वर्षा न करने के कारण परमेश्वर को कोसना।

५ भविष्य में आपत्ति आने की आशा यह बात कि तुमारे दिन खोटे हैं।

६ उदास मुंह लेकर बाहिर आना।

७ छिद्रान्वेषण, दोषदर्शन, और परपीड़न, बिना बात रिस होजाना।

८ काम छोटे करना, बातें बड़ी करना।

९ अपने काम की आप निन्दा करना, जीवन भार समझना।

१० ततफसी बात पर क्रोध ले आना।

११ अपनी योग्यता और बलकी शेखी हांकना पर कर कुछ न सकना।

१२ अपने मिलनेवाले तथा मित्रों की निन्दा करना।

१३ अपने पैरों को दूसरों के पैरों से मिलान करना।

१४ अपने भाग्य की निन्दा करना।

१५ अपने को तुच्छ बनाना, और अपनी योग्यता को कुछ न समझना।

१६ केवल भाग्य के भरोसे बैठे रहना।

१७ यह विचार कि भले दिन निकल गये।

१८ पिछले दुखों को याद करके दुखी होना।

१९ यह सुख सपना देखना कि तुम ऐसे होते तो बड़े अच्छे होते।

२० वर्तमान में कुछ न करके भविष्य के विचार बांधते रहना।

२१ सैकड़ों हजारों मील दूर के कामों का इरादा बांधना परन्तु पास पड़ोस में कुछ न समझना।

२३ दूसरों के सुख तथा वैभव को देखकर उन्हें भोगने की अभिलाषा करना, परन्तु प्राप्त करने के उद्यम से हाथ न लगाना।

२४ यह कहा करना कि यदि "मैं अमुक के स्थान पर होता तो ऐसा करता" । पर जिस स्थान पर हो उस पर कुछ न करना।

कुछ चन्दा देकर अपने को परोपकारी और दानी प्रसिद्ध करना ।

बिगडने के लक्षण ।

१ जब साधारण जीवन तुमें असरता न हो ।
२ जब तुम अपने बापको बुड्ढा खूसट कहने लगगये ।
३ जब तुम बकवाद की बाते चुपचाप सुनने लगगये ।
४ जब तुम उलटे पुलटे सब प्रकार के काम को मंजूर करने लगे और कहने लगे कि अच्छा फिर ठीक हो जायगा ।
५ जब तुम अपने चरित्र की सब बातें अपनी मा से नहीं कह सकते ।
६ जब तुम बिन दुःख पाये अँधेर और ऊट पटांगके कामों में योग देने लगे ।
७ जब तुम दिन भर आलसी बने बैठे रहने का अफसोस न करते हो । और दुष्कर्म पर पछताते न हो ।
८ जब तुमारा उत्साह ढीला पडगया हो । कार्य को जिस उत्तमता से पहिले करते थे उस तरह न कर सकतेहो।
९ जब तुम ऐसे आदमियों में बैठने लग गये जिनको तुम अपनी बहन बेटियों के सामने न लेजा सकते हो । या जिनकी मित्रता तुम अपने घरवालों को जतलाना न चाहते हो ।

बुरी स्त्री ।

१ जो रासिक हो ।
२ जो भोगविलासिनी हो ।
३ जो अपना आचरण अपने बश में न रख सकती हो ।
४ जो बच्चे और घर की गाय भैंसको प्यार न करती हो ।
५ जो कपड़े शऊर से न पहिरती हो ।

६ जो धोखा देनेवाली हो, और पड़ोसियों से लड़ती झगड़ती हो,
७ जो हर बात में खोट निकालती इतराती और नाक मुँह सिकोड़ती हो।
८ जो अपने घरवालों से लड़ती हो और महमानों को बड़ी प्यारी हो।
९ जो अपने समान और किसीको सुन्दर न समझती हो
१० जो अपने सिवाय और किसी की बड़ाई न सह सकती हो।
११ जो कटु भाषणी, और फूहर हो ।
१२ जो अपनी सास का मन रखना न जानती हो।
१३ जो नौकरों से लड़ती रहती हो और उनके सब काम बुरे बताया करती हो।
१४ जो खान पान और कपड़े जैसे सब चीज़ों में अपने लिये सब से अच्छी और बढ़िया चाहा करती हो।
१५ जो रस्ते में खांसती, मठारती, बोलती, बतराती अथवा गहनों से झनर मनर करती जाती हो।
१६ जो इस बात की चिन्ता नहीं करती कि लोग उसके सम्बन्ध क्या कहते हैं।
१७ जो बाहर जाती समय बड़े शृङ्गार और ठाठ बाट से इतराती जातीहै और घरमें मैंह फकेरे फिरा करतीहै
१८ जिस से घरके सब डरा करते हैं और यह भी डरते रहते हैं कि बीबी का कहीं मिज़ाज न बिगड़ उठे
१९ झूठे अथवा मँगेनू गहने पहनकर अपनी शोभा बढ़ाती है ।
२० जो घर में किसी की सेवा नहीं करती यही चाहती है कि सब लोग उसकी ही सेवा करें।
२१ जो धर्म ग्रन्थ न पढ़कर केवल ख्याल और किस्सों की किताबें पढ़ती है।
२२ जो खान पान सुघराई से नहीं बनाती है ।

२३ जो सब से अच्छे कपड़े आप पहनती है, और सास ननद के लिये फटे पुराने उढा देती है।

२४ जो गरीब घर की बहू बेटी होने पर भी बडे घरों में जाने आने का शौक रखती हैं।

२५ जो घर के काम धन्धे, पीसने, कूटने से अपनी निन्दा समझती है।

२६ जो अपनी मा या सास को चाकरनी की तरह काम करते देखा करती है।

बुरा पुरुष।

१ जो सर्वदा बुरबुराता रहता हो।
२ फुजूल खर्च हो।
३ चिडचिडे स्वभाव का हो।
४ जिसकी प्रीति सच्ची न हो।
५ जिसकी बात सच्ची न हो।
६ जो आवश्यकता पडने के सिवाय काम न करता हो।
७ जो रात दिन हुक्का पीने मेंही लगा रहता हो।
८ जिसको धनी बनजाने की चिन्ता लगी रहती हो।
९ जो बुरी स्त्रियों से मेल मिलाप रखता हो।
१० जो दुर्बल, रोगी और निखट्टू हो।
११ जो घर में शेर और बाहिर गीदड़ हो।
१२ जो स्त्री के उत्साह को बढाता न हो।
१३ जो ज्वारी और शराबी हो।
१४ जो स्त्री को अपनी दासी गिनता हो।
१५ जो स्त्रियों की पवित्रता में विश्वास न रखता हो।
१६ जो अपनी स्त्री के साथ बैठकर बातें करने में विरक्त रहता हो।
१७ जो समझता है " घर की मुर्गी दाल बराबर,,।
१८ जो पुरुषों के समान स्त्रियों का आदर करना न जानता हो।

१९ जो समझता है कि स्त्रियां पर्दे में बैठी रहना ही पसन्द करती है।
२० जो अपनी स्त्री का आदर नहीं रखता।
२१ जो दुकानदारी के सिवाय और किसी घरेलू बात में मन नहीं लगाता।
२२ जो जरासी बात से जिसका मिजाज बिगड़ जाता है और गाली बकने लगता है।
२३ जो परमेश्वर के समान अपनी पूजा चाहता है, परन्तु किसी का पालन पोषण नहीं करता।
२४ जो चाहता है कि मनमानी शराब पिये और घरवाली को इस बात का पता न हो।
२५ जो चाहता है कि सब उसकी ही खातिर में लगे रहें।
२६ जो जूए के कर्ज़ को बजाज़ के कर्ज़ से बढ़िया समझता है।
२७ घर का किराया नहीं चुका सकता, पर शराब पीने रोज़ जाता है।
२८ जो अन्य स्त्रियों से ठट्ठा करने में नहीं शरमाता।
२९ जो खयाली पुलाव पकाता रहता है परन्तु रोजगार छदाम कामी नहीं करता।
३० जो जानता है कि खाली रोटी कपड़ा दे देने से स्त्री खुश रहती है।
३१ जो बोलचाल में गंमार और काम काज में भोंदू है।
३२ जो समझता है कि उसे देखतेही सब स्त्रियां मोहित होजाती हैं।
३३ जो अपने सब कर्म गुप्त रूपसे करता है।
३४ जो अपनी बहनों को प्यार नहीं करता।
३५ जो कहा करता है कि बुड्ढे बापके मरनेपर यह बड़े ठाठ बाट से रहे।
३६ जो आवश्यकता पड़ने पर स्त्रियों का आदर नहीं करता।

३७ जो अपनी भंग तमाखू अथवा शराब को फुजूल नहीं समझता और स्त्रीके कपड़ों गहनों को फुजूल गिनता है।

३८ जो माका धन खाने में शर्म नहीं समझता और काम करनेसे हिचकता है ।

३९ जो अपनी स्त्री को जरूरी खर्चके लिये द्रव्य देने में सौ २ प्रश्न करता है ।

४० जो गरीबों को सताता है और जबर्दस्तों के सामने नाक रगड़ता है ।

वह धनी होगया पर आदमी न हुआ

१ उसने अपनी आत्मा की उन्नति न की ।

२ वह सिवाय टका कमाने के और कुछ न जानता था ।

३ उसे भलाई किसी बात में दिखाई नहीं देती थी ।

४ उसने धन कमाया परन्तु मन दुखाया ।

५ वह कोल्हू का बैलही बना रहा ।

६ जिसके करने से दो पैसे का लाभ न हो उसे वह काम नहीं समझता था ।

७ वह कभी "महाशय" नहीं कहलाया ।

८ वह धन मद में मित्रों को भूल गया ।

९ छोटी २ बातों में भी आनन्द ले लेना उसने नहीं सीखा,

१० साधारण बातमें भी आश्चर्य भाव ढूंढ निकालना उससे नहीं बनपड़ा ।

११ उसका जीवन पशुओं के समान था, ज्ञान लाभ का परमानन्द वह न चख सका ।

१२ इस जीवन रूपी गाड़ी के पहियों की धुरी में उसने आमोद प्रमोद और हास्यानन्द रूपी घृत नहीं चुपड़ा।

१३ उसके शरीर का केवल एक अङ्ग पुष्ट हुआ, वह अङ्ग धन संग्रह कारक था ।

१४ सभा सुसाइटी उसे भाती नहीं, यन्त्रों से उसे प्रेम नहीं, सांगीत भाषा उसके लिये एक अज्ञात भाषा थी ।

१५ वह सर्वदा अपने मन में कुछ दिन आराम करने के लिये सोचता रहा, परन्तु वह दिन आगेही सरकता रहा।

१६ उसे किसी की बात सुहाती न थी, केवल टका कमाने के लटके उसको भाते थे।"

१७ सर्व साधारण में खड़े होकर बोलना उससे नहीं बन सकता था; चाहे उसका सिर क्यों न कटजाय, परन्तु किसी सभा में कोई प्रस्ताव पेश न कर सकता था।

१८ धन कमाने के उसने अनेक उपाय निकाले परन्तु अपने मनोभाव बढ़ाने का उसको कभी ध्यान भी न आया।

१९. सिवाय बाजार दर के वह और कुछ न पढ़ता था।

२० मासिक पत्रों के लेख उसने कभी सुने भी नहीं, पुस्तक पढ़ना उसके लिये अनजानी बात थी।

२१ जब बुढ़ापे के दिन आये और काम काज से हाथ थके तब उसको जान पड़ा कि "वह जीतेही मरा हुआहै ,, जीवन काटना कठिन जान पड़ता है।

२२ वह अपने घर और दुकान पर शेर था, परन्तु पंडितों की सभा में उसे कहीं मुँह छिपाने तक को जगह नहीं मिलती थी।

२३ मनोरंजन छुट्टी मनाना, या खेल तमाशे देखना, उसके लिये धन नष्ट करना था।

२४ दूसरोंको सहायता देना अथवा अपनी जाति, नगर और देशोन्नति सम्बन्धी सभाओं में योग देना उसे कभी अच्छा नहीं लगा।

२५ असमर्थ भिखमंगों को वह यह कहकर टाल देता था "मजदूरी करो—पेट भरो ,,।

२६ दुकानदारों की बातें खूब करालो, परन्तु अपने देश काल का ज्ञान उसको तनक भी न था।

२७ उसके न जोरू थी, न बच्चा था, परन्तु रुपिया ओढ़ने

बुढ़ापे में जवानी रखना हो!

१ तो अपने मन को वश में रक्खो।
२ डरपोक तबियत मत रक्खो।
३ उमर की बढती देखकर बूढे मत बनजाओ।
४ नशा पीना अथवा अन्य व्यसन में पडना बहुत बुरा है इससे तुम जल्दी बुड्ढे होगे।
५ खुले मैदान अपने कार्य करो। कोठरी अँधेरी में को वृक्ष उगा नहीं सकता।
६ सांसारिक दृश्य सर्वदा नया है जो जन उसके दृश्य में अपना मन रखता है वह कभी बूढा नहीं होता।
७ जियादती हर कामकी बुरी है, जो बहुत दिन जीना हो साधारण जीवन रक्खो।
८ संतोष वृत्ति रक्खो. लालची मनुष्य की जिंदगी बडी नहीं होती।
९ मन प्रसन्न रखने के लिये तीर्थ यात्रा तथा वन पर्वत भ्रमण किया करो।
१० बुरी चिंताओं में न रहो अपना मन अच्छी आशाओं के विचार में प्रमुदित रक्खो।
११ सुंदर दृश्य, सुंदर विचार, प्रेम और दयाभाव से अपने मन को हराभरा रक्खो।
१२ हँसी दिल्लगी और खुश तबियत रहने से मन मगन रहता है, और मन मगन रहने से बुढापा दूर रहताहै।
१३ पेटू न बनो, क्षुधा निवारण करो, अनेक रोग बहुत खाने, बार बार खाने, और बुरी चीजों के खाने से होते हैं।
१४ हविस न बढाओ, हिर्समें न पडो, ऐसी प्रकृतिसे आयु घटती है।
१५ बच्चों के साथ खेलने में अपनी पदमर्यादा भूलजाओ,

उनके प्यारे बनो, उनको अपना प्यारा बनाओ, ऐसा करने से तुम दीर्घजीवी होगे।

१६ सदा खुली जगह में कसरत करो, सैर, सवारी, खेल, कूद, तैरना, भागना जो कुछ करो खुली जगह में करो। प्रति दिन अपने मन को सुंदर दृश्य देखने, सुंदर पदार्थ निरखने, तथा सुंदर भाव भरी कविता पढने में लगाया करो।

१८ काम में लगे रहो, विश्राम केवल बूढों के लिये है, ज्वान निकम्मे रहने से निकम्मे हो जाते हैं, मन और तन निठल्ले रहें तो बुढापा जल्दी आता है।

१९ शुद्ध वायु सेवनसे स्वास्थ्य और अवस्था दोनों बढती है, जहरीली और बिगडी हवा में कभी मत रहो।

२० यह देखकर मत घबडाओ कि तुमारी उमर के लोग बूढे होगये हैं।

२१ अपने नित्य के काम दस्तूर से करो, नियमसे विश्राम करो. आधी रात से पहिले सोजाओ, और सुख की नींद लो।

२२ क्रोधी मत बनो, क्रोध करने से उमर घटती है।

२३ इन्द्रियों को वश में रक्खो।

२४ प्रेमी होना दीर्घावस्था के लिये अमृत है, धन्य हैं, वे जो सच्चे भगवत प्रेमी हैं।

२५ जिन कर्मों से तुमें निद्रा नहीं आती उनसे सर्वदा बचते रहो।

धनियों से प्रश्न।

१ अपने पुरुषार्थ से तुमने धन कमा लिया है, अब कहो इस से क्या करना है, ऊपर चढोगे कि नीचे गिरोगे?

२ इससे दूसरों का उपकार करोगे कि अपनी इंद्रियों को ही भरोगे?

❀ सुख संचारक वटिका ❀

मातावती इस कहने में जितने मजे समझे जाते हैं उन सबको यह दवा आश्चर्य युक्त गुण दिखाती है, हाथ पैरों की कमजोरी और भड़कन होना, नेत्रों में बार २ पानी आना, कम सुनाई देना, थोड़े काम में थकावट मालूम देना, किसी काम में मन न लगना, अन्न अच्छी तरह न पचना तथा और भी इन्द्रियों की कमजोरी को दूर करने के लिये यह दवा बहुत ही चमत्कारी है, यह वटिका वीर्य शोधक, धातु पौष्टिक और नपुंसकत्व को दूर करके बल को बढाने वाली और आलस्य, बदहजमी भूख न लगना आदि को जड़ से खोने वाली है दस्त साफ होता है। कुछ भी फायदा न हो तो दाम वापिस देंगे। कीमत फी डिब्बी १) डांक खर्च ।)

❀ अर्क कपूर ❀

हैजे में इस दवा से जैसा उपकार पहुंचा है वह किसी से छिपा नहीं है अथवा यों कहिये कि हैजे की यही दवा है. दाम फी शीशी ।) डांक खर्च ।)

❀ दद्रुगज केशरी ❀

कितनाही पुराना दाद क्यों न हो ४ दिनमें बिलकुल चला जावेगा इस दवा में उत्तमता यह है कि दवा लगाते वक्त जलन या तकलीफ नहीं होती बदबू नहीं आती दाम ।) डांक खर्च १ से २ तक ।) १२ शीशी एक साथ लेने से २।) डांकखर्च ।=)

❀ ज्वरनाशक वटिका ❀

सब प्रकार के नये और पुराने बुखार इसकी सिर्फ १ खुराक में जाते रहते हैं १६ गोली की डिब्बी १)

❀ सुधासिंधु के एजेंट होने के नियम ❀

फक्त १२ शीशी सुधासिंधु एक साथ मंगाने ही से हर एक आदमी एजेंट होसक्ता है, १२ शीशी वी. पी. से मंगाने से ४॥।-) में घर बैठे मिलजाती हैं।

२—एजेंट के पास उत्तम साइनबोर्ड और उसके नाम के नोटिस रंग बिरंगे दीवारों पर चिपकाने और हाथ से बांटने के जितने वह मंगावें मुफ्तमें अपने खर्च से हम एजेंट के पास पहुंचा देते हैं इसमें एजेंट का कुछ भी खर्च नहीं पडता विना किसी तकलीफ के माल हाथों हाथ विकजाता है।

३—यदि सुधासिंधु ६ महीने तक न विके तो वापिस लेकर कीमत वापिस देदी जाती है।

४—सुधासिंधु के एजेंट को यदि हमारे यहां की किसी और दवा के मंगाने की जरूरत पडै तो वह दवा भी २५ रु. सैंकडा कमीशन काटकर भेजी जाती है पर अपने पत्र में अपना नंबर लिखिये।

एजेंटको हरसाल दिवाली पर सुंदर चित्र, पंचांग, जंत्री, आदि तरह २ की चीजें भेट में मुफ्त मिलती ह इतनी कम पूंज़ी में बेजोखों का यही व्यापार है।

मंगाने का पता—

क्षेत्रपाल शर्मा मालिक

सुखसंचारक कम्पनी मथुरा।